IOSR Journal of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 25, Issue 8, Series 11 (August. 2020) 34-54
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

कोरोना वायरस से बदलते सामाजिक परिवेश एवं आर्थिक परिवेश के प्रति युवाओ के दृष्टिकोण का अध्ययन

शंकर सिंह
शोधार्थी, शिक्षा विभाग,
बिडला परिसर हे.न.ब.गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल
***Corresponding auther :** शंकर सिंह,*

सारांश

सम्पूर्ण विश्वस्तर पर आज मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए चुनौती के रूप में कोरोना वायरस सामने है। कोरोना वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तेजी से फैलता है तथा फिलहाल इसका कोई भी निश्चित इलाज वैज्ञानिको एवं स्वास्थ्य चिकित्सालयों के पास उपलब्ध नही है। दुनिया भर में कोरोना वायरस से एक लाख बीस हजार से अधिक लोगों की मौत हो गयी है वही कोरोना वायरस के संक्रमण से संक्रमित लोगो की संख्या भी बढ़कर 19 लाख 29 हजार के पार पहुंच गए हैं जोकि गंभीर चिंता का विषय है। वायरस ने दुनिया भर में मानव के समक्ष जीवन का संकट पैदा कर दिया है, जिससे मानव समाज बेहद डरा हुआ है। दुनिया के तमाम देशो में लॉकडाउन की स्थिति बनी हुई है इसने लोगो के सामान्य दिनचर्या में डर का वातावारण पैदा कर दिया है जो लोगो के व्यवहार को बदल रहा है। लोग अपने घरो से बाहर जाने पर डरे हुए है एवं परिचित लोगो से हाथ मिलाने से बच रहे है सामाजिक परिवेश में भय की स्थिति बनी हुई है, वहीँ दूसरी ओर दुनिया में आर्थिक संकट मंडराता जा रहा है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कोरोना वायरस के प्रभाव से लोगो के सामाजिक परिवेश में प्रभाव एवं वैश्विक सन्दर्भ में इसके प्रभाव का अध्ययन करना है। न्यादर्श के रूप में उत्तराखण्ड एवं देश के अन्य राज्यों के युवाओ को उपलब्धता के अनुरूप लिया गया है आंकड़ो के संग्रह के लिए शोधार्थी द्वारा गूगल डाकुमेंट्स के माध्यम से कोरोना वायरस से सम्बन्धित एक प्रश्नावली का निर्माण कर प्रयोग किया गया है। आंकड़ो के विश्लेषण के लिए प्रतिशत का प्रयोग किया गया है आंकड़ो के संग्रहण और विश्लेषण के उपरान्त निष्कर्ष प्राप्त हुए है लोग सेनीटाईजर का अत्यधिक प्रयोग कर रहे है कोरोना वायरस के कारण सामाजिक परिवेश में डर का माहौल बना हुआ है लोग घरो से बाहर जाने में घबरा रहे है कोरोना वायरस के लिए लोगो ने मांसाहारी संस्कृति, जैविक हथियारों का निर्माण एवं प्रकृति के साथ मानव द्वारा अत्यधिक छेड़छाड़ को माना है सोशल साइट्स ने लोगो को कोरोना वायरस के प्रति जागरूक किया है तथा भारत में अब भी कोरोना वायरस के टेस्ट काफी कम मात्रा में किये जा रहे है।

मुख्यशब्द – कोरोना वायरस, सामाजिक परिवेश, आर्थिक संकट, सेनीटाईजर, मांसाहारी संस्कृति एवं जैविक हथियार।

Date of Submission: 11-08-2020 Date of Acceptance: 27-08-2020

प्रस्तावना

सम्पूर्ण विश्वस्तर पर आज मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए चुनौती के रूप में कोरोना वायरस सामने है। कोरोना वायरस के संक्रमण का प्रारम्भ चीन के वुहान शहर में दिसम्बर 2019 के मध्य से हुआ, जिसने आज सम्पूर्ण विश्व को

अपनी चपेट में लिया है और एक वैश्विक महामारी के रूप में विश्वस्तर पर उजागर है। इसके प्रकोप से चिंतित विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 23 जनवरी 2020 को कोरोना प्रकोप को अंतरराष्ट्रीय चिंता का मुद्दा घोषित करते हुए विश्व में एक सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित करने के लिए फैसला किया। दरअसल कोवाइड–19 कोरोना वायरस संक्रमण से संक्रमित होने पर व्यक्ति को जुकाम, बुखार, सांस लेने में समया, नाक का बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। चिंता का विषय यह है कि कोरोना वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तेजी फैलता है तथा फिलहाल इसका कोई भी निश्चित इलाज वैज्ञानिको एवं स्वास्थ्य चिकित्सालयों के पास उपलब्ध नही है। इसलिए यह सम्पूर्ण विश्व के नागरिको के लिए खतरा बना हुआ है, इस संक्रमण को लेकर विश्व स्तर पर बहुत अधिक सावधानी बरती जा रही है। इस वायरस के स्रोत्र से सम्बन्धित कई मत है कि जानवरों में यह संक्रमण फैला उसके उपरांत संक्रमित जानवर इंसान के संपर्क में आया और एक व्यक्ति में उससे वो बीमारी फैल गयी, इसके बाद चीन के वुहान शहर में वाइल्ड लाइफ मार्केट के कामगारों में यह फैलने लगी और इसी से वैश्विक स्तर पर कोरोना संक्रमण की उत्पप्ति हुई। चीन के वैज्ञानिक इस कहानी को प्रमाणित करने का प्रयास कर रहे हैं कि कोरोना वायरस जानवरों से मानव में आया जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ लंदन के प्रोफेसर एंड्र्यू कनिंगम के अनुसार कि कोरोना संक्रमण से सम्बन्धित घटनाओं की कड़ी एक दुसरे से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है आगे उन्होंने कहा कि यह खोज जासूसी कहानी की तरह लगती है कनिंगम के अनुसार कई जंगली जानवर कोरोना वायरस के स्रोत हो सकते हैं लेकिन मुख्य रूप से चमगादड़ बड़ी संख्या में अलग–अलग किस्म के कोरोना वायरस के स्रोत्र हैं, प्रोफेसर कनिंगम कहते हैं कि मीट के बाजार में विषाणुओ को एक जीव से दूसरे जीव में जाने का पर्याप्त अवसर मिलता है, वेट मार्केट यानी मांस का बाजार एक जीव से दूसरे जीव में रोगाणु फैलने उत्तम माध्यम है यहां इंसान भी संक्रमित होते हैं। यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन (यूसीएल) के प्रोफेसर केट जोनस ने इस सन्दर्भ में उल्लेख किया तथ्य के पक्का प्रमाण मौजूद है कि चमगादड़ों ने स्वयं को बहुत सारे मामलों में परिवर्तित किया है उन्होंने कहा चमगादड़ बीमार पड़ते हैं तब बड़ी संख्या में विषाणुओं आपस में टकराते हैं इसमें कोई शंका नहीं है कि चमगादड़ जैसे रहते हैं, उसमें विषाणु अत्यधिक पनपते है। इसी सन्दर्भ में यूनिवर्सिटी ऑफ नॉटिंगम के प्रोफेसर जोनाथन बॉल के अनुसार चमगादड़ स्तनपायी होते हैं इसलिए आशंका होती है कि यह या तो मानव को सीधे तौर पर संक्रमित कर सकते हैं या फिर किसी अन्य माध्यम से भी संक्रमित कर सकता है। प्रोफेसर जोनस के अनुसार वाइल्ड लाइफ से संक्रामक बीमारियों का बढ़ना शायद मानव के लालच को भी प्रदर्शित करता है दरअसल मानव वाइल्ड लाइफ के जीवन में अतिक्रमण करता है सम्पूर्ण परिदृश्य में परिवर्तन हो रहा है नूतन विषाणुओं के संपर्क में मानव जनसँख्या जिस प्रकार से पिछले कुछ वर्षो में आयी है वैसा अतीत में कभी नहीं हुआ। जहाँ दुनिया भर में यह बात चीन द्वारा घोषित की गयी की 31 दिसम्बर को पहला मामला इससे सम्बन्धित आया, वही लांसेट मेडिकल जर्नल में चीनी शोधकर्ताओं द्वारा प्रकाशित एक शोध के अनुसार Covid–19 से संक्रमित होने वाले पहले व्यक्ति का मामला 1 दिसंबर 2019 को दर्ज हुआ और यह व्यक्ति वुहान के मछली थोक बाजार के संपर्क में नहीं आया था। यानि तरह तरह के मत इस सन्दर्भ में है बहरहाल जो भी हो मगर जो सबसे भयावह है इससे समपूर्ण संसार के मानव सभ्यता पर संकट उत्पन्न हुआ है। द इकोनामिक टाइम्स हिन्दी समाचार के 14 अप्रैल 2020 के अनुसार कोरोना का संक्रमण लगातार तेजी से बढ़ रहा है दुनिया भर में इससे संक्रमित लोगो की संख्या 20 लाख पहुच गयी है दुनिया भर में कोरोना वायरस संक्रमण ने अब तक 1.19 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हो गयी है वही दुनिया भर में अब तक कोरोना नाम की इस महामारी से 447,821 लोग ठीक भी हुए है। कोरोना वायरस से अमेरिका में सबसे ज्यादा अधिक स्थिति खराब हुई है, अमेरिका में संक्रमण से मरने वाले लोगों की संख्या 23,644 से अधिक हो गयी है। इटली, फ्रांस, स्पेन और जर्मनी में भी मरने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है अब तक के आंकड़ो में नजर डाले तो अमेरिका में 5.3 लाख से अधिक लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हैं यह संख्या चार देशों– स्पेन (1,63,027), इटली (1,52,271), जर्मनी (1,25,452) और फ्रांस

(93,790) के मरीजों की कुल संख्या के लगभग बराबर है। संक्रमण से हुई मौतों के मामले में अमेरिका और इटली के बाद स्पेन (16,606), फ्रांस (13,832) और ब्रिटेन (9,875) का नम्बर आता है। आकडे प्रत्येक सैकण्ड में बदल रहे है, ऐसे में दुनिया में इस महामारी के फैलाव के मची त्रासदी को अभी अनुमान करना भी संभव नही है। मानव जीवन के अलावा भी कोरोना वायरस ने सम्पूर्ण विश्व के हरेक पहलु को प्रभावित किया है। बीबीसी के अनुसार यूरोप के आर्थिक सहयोग और विकास संगठन ओईसीडी ने 2020–21 में भारत की अर्थव्यवस्था के विकास की गति का पूर्वानुमान 1.1 प्रतिशत घटा दिया है जहाँ पहले अर्थव्यवस्था की विकास दर 6.2 प्रतिशत का अनुमान था वही अब 5.1 प्रतिशत किया गया है। वही ग्लोबल वर्ड संसार के कल्पना को भी कोरोना वायरस ने अपनी चपेट में ले लिया है संसार भर के देश एक दुसरे की आर्थिक सम्बन्धो की पूर्ति करने में सक्षम नही दिख रहे है बीबीसी के लेख में उल्लेखित स्टैंडर्ड एंड पुअर्स के अनुसार, एशिया–प्रशांत क्षेत्र को कोविड–19 से करीब 620 अरब डॉलर का नुकसान हो सकता है वही इंटरनेशनल लेबर ऑर्गनाइजेशन के अनुसार कोरोना वायरस सिर्फ एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट नहीं है , बल्कि यह एक मौजूदा बड़ा लेबर मार्केट और आर्थिक संकट भी बन गया है जो लोगों को बड़े पैमाने पर प्रभावित करेगा और आईएलओ के अनुसार कोरोना वायरस फैलाव के कारण दुनियाभर में ढाई करोड़ नौकरियां खतरे में हैं यानि हरेक क्षेत्र को कोरोना वायरस प्रभाविक कर रहा है। बीबीसी के अनुसार ऑटोमोबाइल कंपनी सिएट ने स्पेन में गाड़ियों का उत्पादन बंद कर अस्पतालों के लिए वेंटिलेटर्स का निर्माण शुरू कर दिया है कुछ देशों में तो टेक्सटाइल कंपनियां मास्क बना रही हैं। इस पर विक्टर जमोरा कहते हैं कारोबारी पैमाने पर देखें तो मेरे लिए इस महामारी ने आर्थिक भूमंडलीकरण की अवधारणा को खत्म कर दिया है और हम संरक्षणवाद पर वापस लौट आए हैं। यानि विपदा की इस स्थिति में मनुष्य अपने तक सिमित है ठीक वैसे ही दुनिया के तमाम देश खुद के बचाने के लिए संकुचित जैसे हो रहे है स्वार्थ एवं वर्चस्व की जंग मौजूदा परिस्थितियों में नये रूप में उभर कर सामने आ रही है। बीबीसी के अनुसार एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में राष्ट्रपति ट्रंप ने घोषणा कि हमें मास्क की आवश्यकता है हम नहीं चाहते कि इसे दूसरे लोग ले अगर लोग इसे हमें नहीं देंगे जिसकी हमारे लोगों को जरूरत है तो हम उनसे सख्ती से निपटेंगे। अर्थात यहाँ वर्चस्व की लड़ाई भी सामने आ रही है जो इस दुनिया का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है, एक ओर जहाँ कोरोना वायरस की महामारी की चपेट में लाखों लोग आकर अपनी जान गवा चुके है दुनिया के देशों के बीच भरोसा संकट काल में कमजोर रूप से सामने आया है बीबीसी के अनुसार प्रोफेसर मैनेल पीयरो ने कहा कि कोरोना ने सरकारों और बाजार अर्थव्यवस्था का सबसे घिनौना चेहरा हमारे सामने लाकर रख दिया है। अब इन हालातों में दुनिया के पास सिर्फ एक ही रास्ता है लॉकडाउन, जिसको पूरी दुनिया में प्रभावित देश लागू कर रहे है। एक अनुमान के मुताबिक लॉकडाउन से सत्तर फीसदी से ज़्यादा तक संक्रमण को कम करने में कामयाबी मिल रही है। बीबीसी के अनुसार डॉक्टर एडम कुचार्सकी कहते है प्रमाण हैं कि कई देशों में लॉकडाउन के दौरान संक्रमण के मामले में 70 प्रतिशत से भी ज़्यादा की कमी आई है चीन में 80 से 90 फीसदी गिरावट आई है यानि सम्पूर्ण दुनिया इसलिए इस स्थिति में पहुंची है कोरोना वायरस के बचाव हेतु लॉकडाउन ही सही उपाय फिलहाल सामने है। कोरोना वायरस के कारण जहाँ एक ओर सभी लोग घरो में बंद है उनके सामने भी मानसिक स्वास्थ्य की परेशानिया आ रही है बीबीसी के अनुसार दिल्ली की रिचा जनता कर्फ़्यू के बाद से ही अपने पति और बच्चों के साथ घर में रह रही हैं उनके अनुसार पहले अच्छा लगा कि पूरे परिवार के साथ घर में रह पाएंगे और उस समय कोरोना का डर भी ज्यादा नहीं था लेकिन अब रोज–रोज खबरें देखकर डर लगता है कि हमारा क्या होगा मुझे बार–बार लगता है कि कहीं परिवार में किसी को कोरोना वायरस हो गया जैसे विचार आते है कोरोना वायरस जैसे मेरे दिमाग पर छाया रहता है। मनोवैज्ञानिक पारुल खन्ना पराशर के अनुसार लोगों के लिए पूरा माहौल बदल गया है अचानक से स्कूल, ऑफिस, व्यवसाय सब बंद हो गए घर से बाहर नहीं जाना है और दिनभर कोरोना वायरस की ही खबरें देखनी हैं इसका असर मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ना स्वाभाविक है। इन सब माहौल के बीच लोगो में चिंता, गुस्सा, डर, चिड़चिड़पना, उदासी और उलझन होनी

स्वाभाविक हो सकती है। वही रोजी रोटी का संकट भी धीमे धीमे गहराता जायेगा। जनहित स्वास्थ स्पेशिलस्ट सिल्विया करपगम के अनुसार कोरोना वायरस के लाकडाउन की स्थिति आम लोगों खास तौर पर गरीब तबके के स्वास्थ्य पर बुरा असर डालेगी, भारत में पहले से ही बच्चों और महिलाओ में पौष्टिकता की भारी कमी पाई जाती है। हार्वार्ड स्कॉलर सूरज येंगडे के अनुसार कोरोना का असर जहां इन सारे मामलों पर सीधे रूप में स्पष्ट है वही इसके राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभाव को भी पूरी तरह नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। श्रम मंत्रालय के आंकड़े के मुताबिक देश की 81 फीसदी से ज्यादा जनसँख्या की आमदनी 18,000 रूपये से भी कम है और तालाबंदी की वजह से कारखाने और सभी व्यावसाय ठप्प है। जिसका असर रोजगार और लोगों की कमाई पर होना स्वाभाविक है यानि मानव जीवन का सम्पूर्ण भाग कोरोना वायरस के कारण प्रभावित है। एक तिहाई मजदूर लॉकडाउन के चलते शहरों में फंसे हुए हैं जहां पर न तो पानी है, न खाना और न ही पैसा और जो मजदूर अपने गांव पहुंच भी गए है वे भी पैसे और राशन की समस्या से जूझ रहे हैं वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की आबादी का 37 फीसदी हिस्सा यानी कि 45 करोड़ लोग 'आंतरिक प्रवासी' हैं जो लॉकडाउन के चलते दुसरे शहरो में फसें हुए है हजारो की संख्या में लोग मिलो पैदल चलकर अपने घरो तक पहुच रहे है।

अध्ययन के उद्देश्य

- कोरोना वायरस के कारण दैनिक दिनचर्या पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- वायरस से बचाव हेतु सेनीटाईजर के उपयोग का अध्ययन करना।
- कोरोना वायरस का सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश उत्पन्न विभिन्न समस्याओ के प्रति युवाओ के दृष्टिकोण पर प्रभाव अध्ययन करना।
- लाकडाउन एवं सोशल साइट्स के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- कोरोना वायरस के उद्भव एवं प्रभाव संयुक्त राष्ट्र संघ भूमिका एवं भारत में कोरोना टेस्ट की मात्रा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

सीमांकन

- प्रस्तुत अध्ययन को युवा वर्ग तक सीमित किया गया है ।
- प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न जनपदों एवं देश के अन्य राज्यों से उपलब्ध आंकड़ो एवं सुचना के आधार पर उपलब्ध युवा वर्ग तक सीमित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक शोध विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण प्राविधि का उपयोग किया गया है एवं शोध की गुणात्मक विधि को अपनाया गया है

शोध की जनसँख्या

प्रस्तुत अध्ययन में शोध की जनसँख्या के रूप में युवा वर्ग को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के लिए उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि से उपलब्धता के अनुसार उत्तराखंड राज्य के पिथौरागढ़ , पौड़ी गढ़वाल , रुद्रप्रयाग , टेहरी , उत्तरकाशी ,अल्मोड़ा ,हरिद्वार ,देहरादून एवं देश के विभिन्न राज्यों से 210 युवाओ को लिया गया ळें

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ो के संग्रह के लिए शोधार्थी द्वारा गूगल डाकुमेंट्स के माध्यम से कोरोना वायरस से सम्बन्धित एक प्रश्नावली का निर्माण किया गया है एवं गूगल डाकुमेन्टस की सहायता से उस प्रश्नावली को भरवा कर एकत्रित कर आंकड़ो का विश्लेषण किया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण प्राप्त अंकों के विश्लेषण प्राप्तांकों के लिए प्रतिशत का प्रयोग किया है।

अध्ययन के परिणाम एवं निष्कर्ष

तालिका 1.1 उपलब्ध न्यादर्श का अध्ययन

उपलब्ध न्यादर्श	Frequency	Percent
पुरुष वर्ग	111	52.9
स्त्री वर्ग	99	47.1
Total	210	100.0

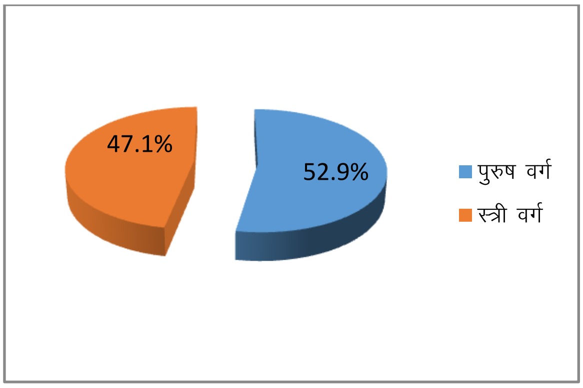

तालिका संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध पत्र में न्यादर्श के रूप में उपलब्ध 210 युवा वर्ग में से 111 अर्थात 52.9 प्रतिशत पुरुष वर्ग एवं 99 अर्थात 47.1 प्रतिशत स्त्री वर्ग के युवक एवं युवतियां है जोकि शोध पत्र में न्यादर्श के रूप में उपलब्ध है ।

तालिका 1.2 शैक्षिक योग्यता का अध्ययन

शैक्षिक योग्यता	Frequency	Percent
स्नातक	56	26.7
स्नातकोत्तर	128	61.0
अन्य	26	12.4
Total	210	100.0

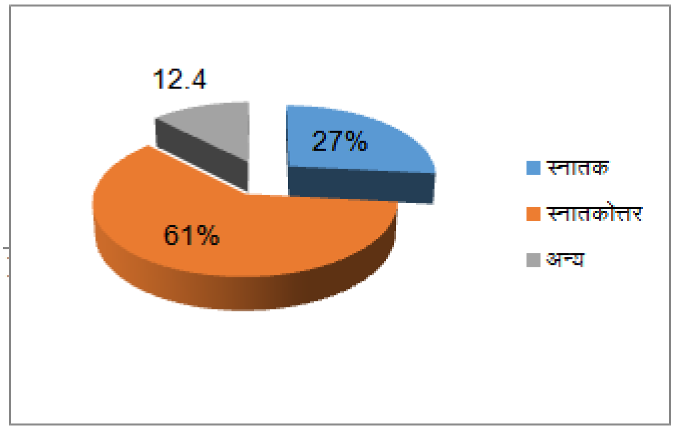

तालिका संख्या 1.2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि न्यादर्श के रूप में उपलब्ध युवा वर्ग में से 26.7 प्रतिशत युवा वर्ग की शैक्षिक योग्यता स्नातक स्तर , 61 प्रतिशत स्नातकोत्तर एवं 12.4 प्रतिशत अन्य शैक्षिक योग्यता रखने वाला युवा वर्ग शामिल है।

तालिका 1.3 विभिन्न स्थानों एवं क्षेत्रों के वर्गीकरण का अध्ययन

स्थानों एवं क्षेत्रों के वर्गीकरण	Frequency	Percent
पिथौरागढ़	35	16.7
अल्मोड़ा	11	5.2
रुद्रप्रयाग	14	6.7
हरिद्वार	30	14.3
पौड़ी गढ़वाल	13	6.2
छेहरादून	17	8.1
टेहरी गढ़वाल	16	7.6
उत्तरकाशी	16	7.6
उत्तराखण्ड राज्य के अलावा देश के अन्य राज्य	58	27.6
Total	210	100.0

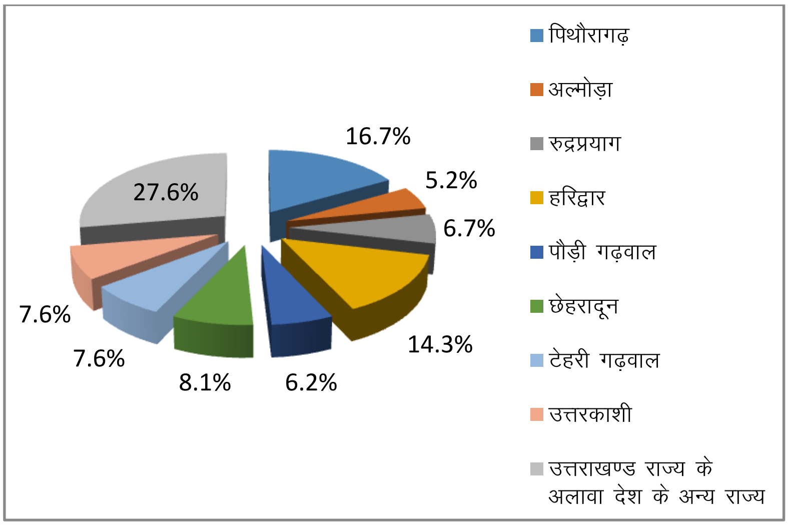

तालिका संख्या 1.3 के अवलोकन में शोध पत्र में न्यादर्श के रूप में उपलब्ध युवा वर्ग के विभिन्न स्थानों एवं क्षेत्रों का वर्गीकरण स्पष्ट है जिसमे उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों जैसे पिथौरागढ़ से 16.7 प्रतिशत ,अल्मोड़ा 5.2 प्रतिशत रुद्रप्रयाग 6.7 प्रतिशत, हरिद्वार 14.3 प्रतिशत, पौड़ी गढ़वाल 6.2 प्रतिशत ,देहरादून 8.1 प्रतिशत, टेहरी गढ़वाल 7,6 प्रतिशत, उत्तरकाशी 7.6 प्रतिशत एवं उत्तराखण्ड राज्य के अलावा देश के अन्य राज्यों से 27.6 प्रतिशत युवा वर्ग सम्लिलित है।

तालिका 1.4 सेनीटाईजर प्रयोग का अध्ययन

सेनीटाईजर प्रयोग	Frequency	Percent
हा	181	86.2
नही	29	13.8
Total	210	100.0

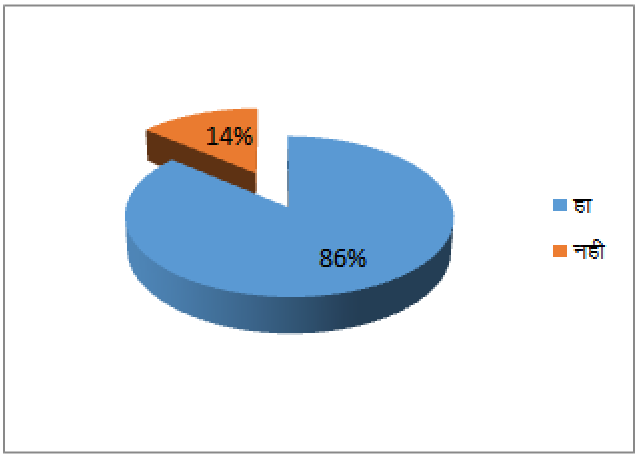

तालिका संख्या 1.4 के विश्लेषण से पाया गया कि कोरोना वायरस के प्रभाव के कारण 86.2 प्रतिशत युवा वर्ग सेनीटाईजर का प्रयोग हाथों को धोने ,साफ सुथरा एवं वायरस रहित रखने हेतु कर रहे है और 13.8 प्रतिशत अब भी

सेनीटाईजर उपयोग नही कर रहे है वह प्रतिदिन उपयोग होने वाले साबुन इत्यादि का उपयोग हाथ साफ करने हेतु कर रहे है।

तालिका 1.5 हाथ धोने की बारम्बारता एवं सेनीटाईजर के उपयोग का अध्ययन

हाथ धोने मे सेनीटाईजर का उपयोग	Frequency	Percent
एक से पांच बार	60	28.6
6 से 10 बार	70	33.3
11 से 15 बार	35	16.7
16 से अधिक बार	20	9.5
सेनीटाईजर का प्रयोग नही	25	11.9
Total	210	100.0

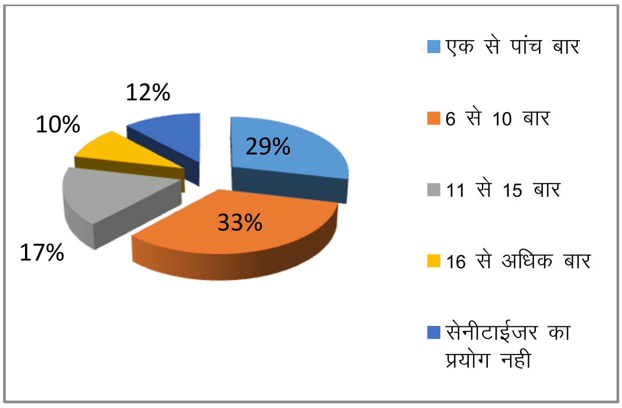

तालिका 1.5 में प्रतिदिन हाथ धोने की बारम्बारता एवं सेनीटाईजर के प्रयोग का अवलोकन किया गया है तालिका के विश्लेषण करने पर पाया गया कि वर्तमान समय में कोरोना वायरस के प्रभाव के कारण 28.6 प्रतिशत युवा वर्ग दिन में एक से पांच बार हाथ धोने में सेनीटाईजर का उपयोग कर रहे है 33.3 प्रतिशत युवा वर्ग दिन में 6 से 10 बार, 16.7 प्रतिशत 11 से 15 बार , 9.5 प्रतिशत दिन में 16 से अधिक बार हाथ धोने में सेनीटाईजर का प्रयोग कर रहे है जबकि 11.9 प्रतिशत युवा अब भी हाथ धोने में सेनीटाईजर का प्रयोग नही कर रहे है अत विश्लेषण में पाया गया कि वायरस के प्रभाव के कारण सेनीटाईजर का उपयोग अधिकतर हो रहा है।

तालिका 1.6 दिनचर्या प्रभावित का अध्ययन

दिनचर्या प्रभावित	Frequency	Percent
हा	150	71.4
नही	60	28.6
Total	210	100.0

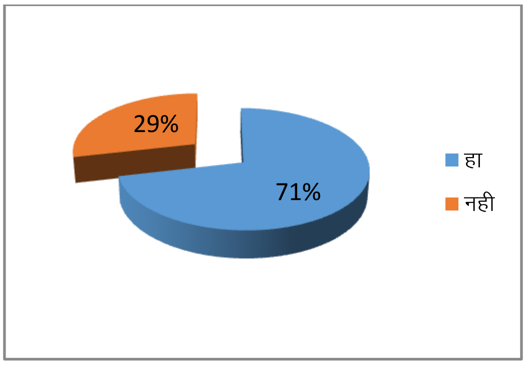

तालिका संख्या 1.6 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि कोरोना वायरस के प्रभाव के कारण 71.4 प्रतिशत युवा वर्ग ने माना कि उनकी दिनचर्या इससे प्रभावित हुई है तथा 28.6 ने माना इसका प्रभाव उनकी दैनिक जीवन पर अधिक नही हुआ है अत अधययन में पाया गया हिया कि कोरोना वायरस के प्रभाव के चलते लोगोके दैनिक दिनचर्या एवं उससे सम्बन्धित क्रियाकलाप प्रभावित हुआ है।

तालिका 1.7 लॉकडाउन के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

लॉकडाउन से कोरोना वायरस संक्रमण पर रोक	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	2	1.0
असहमत	4	1.9
अनिश्चित	20	9.5
सहमत	95	45.2
पूर्ण सहमत	89	42.4
Total	210	100.0

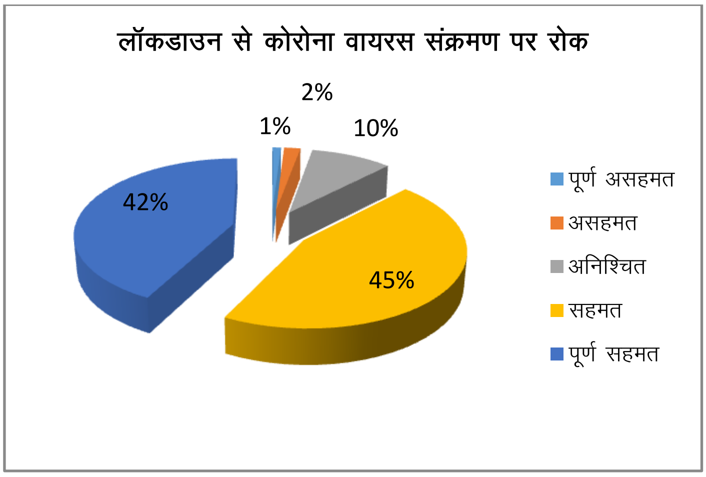

तालिका 1.7 के विश्लेषण में पाया गया 42.4 प्रतिशत द्वारा पूर्ण सहमत्ता एवं 45.2 प्रतिशत द्वारा सहमता के साथ स्वीकार्य किया गया कि भारत में हो रहे लॉकडाउन से कोरोना वायरस संक्रमण पर रोक लगेगी तथा 9.5 प्रतिशत द्वारा एस संन्दर्भ में अनिश्चिता एवं 1.9 असहमति एवं 1 प्रतिशत द्वारा पूर्ण असहमति व्यक्त की गयी है अत शोध में पाया गया है कि देश में लागू लॉकडाउन से कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने में सलफता पायी जा सकती है।

तालिका 1.8 कोरोना वायरस से प्रभावित सामाजिक परिवेश अध्ययन

घर से बाहर जाने पर डर	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	3	1.9
टसहमत	25	11.9
अनिश्चित	19	9.0
स्हमत	101	48.1
पूर्ण सहमत	61	29.0
Total	210	100.0

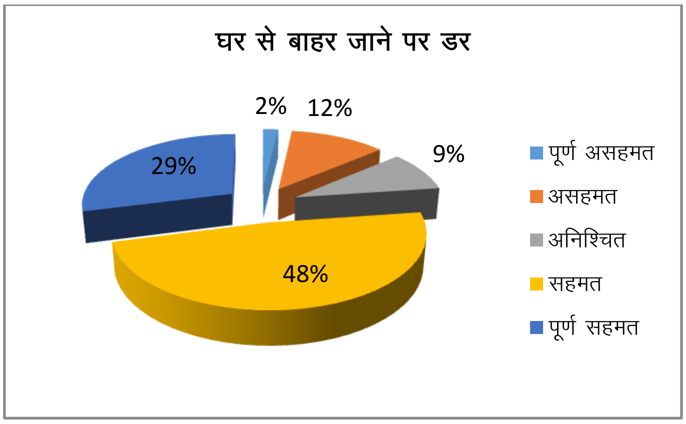

तालिका संख्या 1.8 के अवलोकन से स्पष्ट है कोरोना वायरस संक्रमण के पभाव के कारण 29 प्रतिशत युवा वर्ग ने पूर्ण सहमत्ता एवं 48.1 प्रतिशत सहमता के साथ स्वीकार किया कि संक्रमण के फैलने एवं प्रभावित होने के डर से वह जरुरी समान की पूर्ति के लिए घर से बाहर जाने पर डरे हुए रहते है 9 प्रतिशत ने इस सन्दर्भ में अनिश्चिता प्रकट की, वही 11.9 प्रतिशत ने किसी भी प्रकार के डर से असमत्ता तथा 1.9 प्रतिशत ने संक्रमण के प्रभाव से घर से बाहर जाने पर डर से पूर्ण असमत्ता प्रकट की है अत अध्ययन में पाया गया है कि अधिकतर युवा वर्ग कोरोना वायरस संक्रमण के चलते घर से बाहर जाने में संक्रमण फैलने से डर हुए है

तालिका 1.9 कोरोना वायरस से प्रभावित सामाजिक परिवेश अध्ययन

हाथ मिलाने एवं गले मिलने से बचना	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	3	1.4
टसहमत	4	1.9
अनिश्चित	9	4.3
सहमत	72	34.3
पूर्ण सहमत	122	58.1
Total	210	100.0

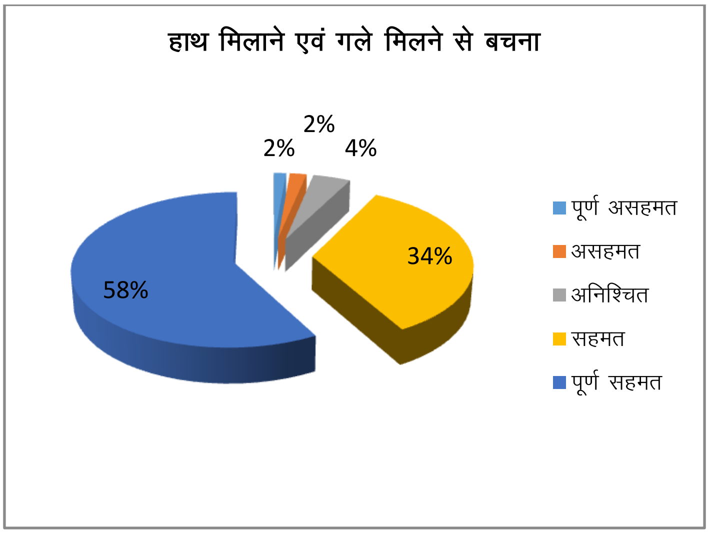

तालिका संख्या 1.7 के अवलोकन में पाया गया है कि 58.1 प्रतिशत में पूर्ण सहमत्ता एवं 34.1 प्रतिशत ने सहमता के साथ स्वीकार किया कि कोरोना वायरस संक्रमण के फैलाव के कारण घरो से बाहर जाने पर परिचित लोगो के मिलने पर हाथ मिलाने एवं गले मिलने से बच रहे है तथा 4.3 प्रतिशत ने इस सन्दर्भ में अनिश्चिता प्रकट की एवं 1.9 असह्मत्ता एवं 1.4 प्रतिशत द्वारा इस सन्दर्भ में पूर्ण असह्मत्ता प्रकट की गयी है अत अध्ययन में पाया गया है कि वर्तमान परिस्थितियों में कोरोना संक्रमण के फैलाव के कारण लोगो के व्यवहार में परिवर्तन देखने को मिल रहा है अधिकतर लोग अब घरो से बाहर जाने पर लोगो से हाथ मिलाने एवं गले मिलने जैसे क्रियाकलापों से दुरी बनाकर रख रहे है।

तालिका 1.10 कोरोना वायरस से प्रभावित सामाजिक परिवेश का अध्ययन

सामाजिक परिवेश में डर का माहौल	Frequency	Percent
असहमत	6	2.9
अनिश्चित	3	1.4
सहमत	91	43.3
पूर्ण सहमत	109	51.9
Total	210	100.0

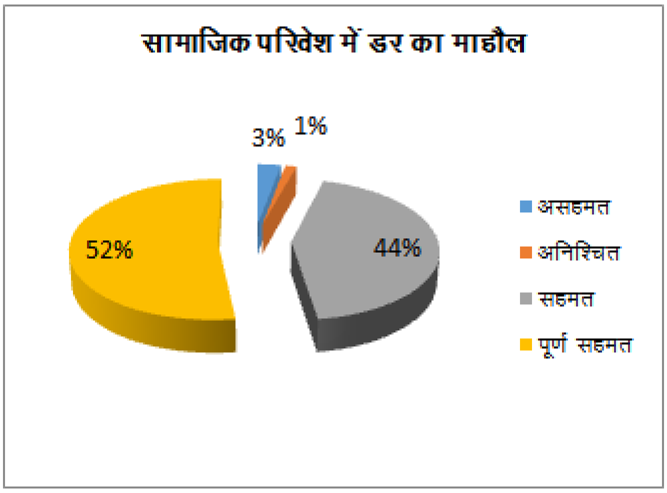

तालिका 1.10 के अवलोकन से स्पष्ट है 51.9 प्रतिशत युवा वर्ग ने पूर्ण सह्मत्ता एवं 43.3 प्रतिशत ने सहमत्ता व्यक्त करते हुए कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण वर्तमान समय में स्वीकार्य किया कि सामाजिक परिवेश में डर का माहौल बना हुआ है अर्थात जो सामाजिक परिवेश उनके रहन सहन के लिए सुविधायुक्त स्थान था कोरोना संक्रमण के चलते सामाजिक परिवेश में भय का माहौल व्याप्त है 1.4 प्रतिशत ने इस सन्दर्भ में अनिशिचिता एवं 2.9 प्रतिशत द्वारा असहमति व्यक्त की गयी है अत अध्ययन में पाया गया है कोरोना वायरस के संक्रमण के प्रभाव के परिणामस्वरूप समाज में डर का माहौल पाया गया है।

तालिका 1.11 कोरोना वायरस से प्रभावित सामाजिक परिवेश में यात्रा प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

यात्रा	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	4	1.9
असहमत	16	7.6
अनिश्चित	14	6.7
सहमत	84	40.0
पूर्ण सहमत	92	43.8
Total	210	100.0

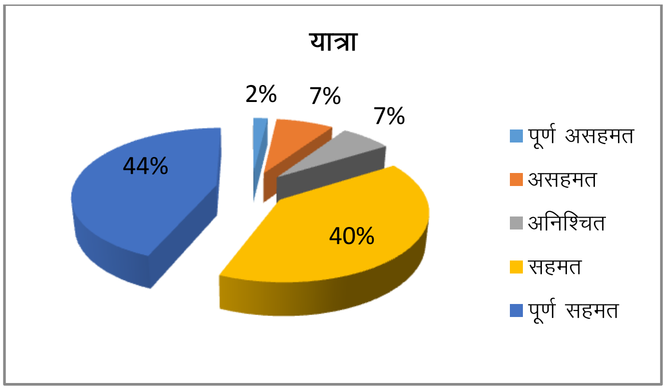

तालिका संख्या 1.11 के विश्लेषण में पाया गया है कि कोरोना संक्रमण के चलते लोग यात्रा करने के विचार को लेकर डरे हुए है 43.8 प्रतिशत लोगो ने इस सन्दर्भ में पूर्ण सहमत्ता एवं 40 प्रतिशत ने सहमत्ता जताई है कि वह एक स्थान से दुसरे स्थान पर यात्रा करने के बारे में सोचकर भी घबराये हुए है 6.7 प्रतिशत ने इस सन्दर्भ में अनिश्चिता प्रकट की है वही 7.6 प्रतिशत ने इस सन्दर्भ में असह्मता एवं 1.9 प्रतिशत ने इस सन्दर्भ में पूर्ण असह्मत्ता व्यक्त की है अत अध्ययन में पाया गया है कि देश दुनिया में कोरोना संक्रमण के चलते लोग कही पर भी यात्रा नही करना कहते है वर्तमान समय में लोग यात्रा को लेकर डरे हुए है अर्थात वो सिर्फ घरो में रहना चाहते है।

तालिका 1.12 कोरोना वायरस मानव निर्मित आपदा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

मानव निर्मित आपदा	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	6	2.9
असहमत	2	1.0
अनिश्चित	50	23.8
सहमत	58	27.6
पूर्ण सहमत	94	44.8

Total	210	100.0

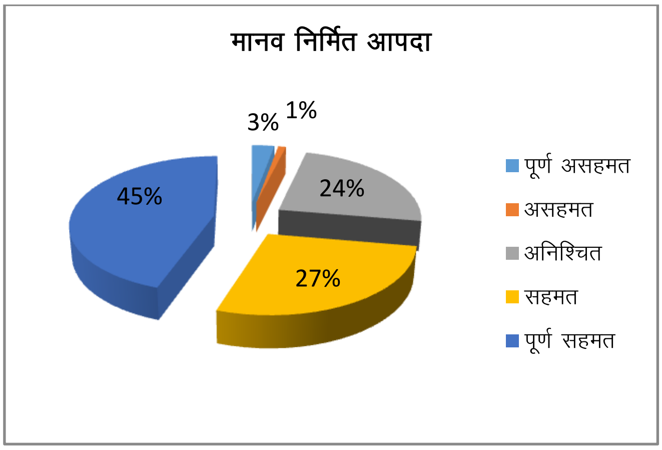

तालिका संख्या 1.12 के विश्लेषण में पाया गया है कि 44.8 ने पूर्ण सहमत्ता एवं 27.6 प्रतिशत ने सहमत्ता के साथ कोरोना वायरस को मानव द्वारा निर्मित वायरस माना है वही 23.8 प्रतिशत ने इसके मानव निर्मित होने को लेकर तटस्थता व्यक्त की है तथा मात्र 1 प्रतिशत ने असह्मत्ता एवं 2.9 प्रतिशत ने इस सन्दर्भ में अपनी असहमति प्रकट की है अत अध्ययन में पाया गया है कि कोरोना वायरस को अधिकतर ने मानव निर्मित आपदा स्वीकार किया है।

तालिका 1.13 कोरोना वायरस वैश्विक समस्या के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

वैश्विक समस्या	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	1	.5
असहमत	3	1.9
अनिश्चित	4	1.9
सहमत	39	18.6
पूर्ण सहमत	162	77.1
Total	210	100.0

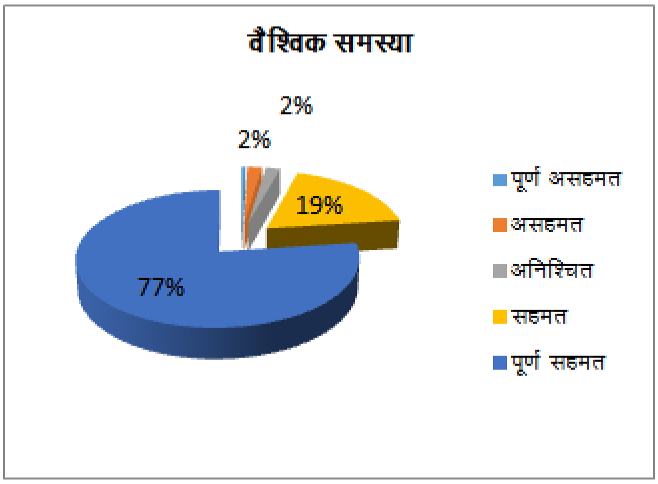

तालिका संख्या 1.13 के विश्लेषण में पाया गया है कि कोरोना वायरस संक्रमण को 77.1 ने पूर्ण सहमत्ता एवं 18.6 प्रतिशत ने सहमत्ता के साथ इसको एक वैश्विक समस्या माना है वही 1.9 प्रतिशत ने तटस्थता तथा मात्र 1.9 प्रतिशत ने असह्मत्ता एवं .5 प्रतिशत ने इस सन्दर्भ में अपनी असहमति प्रकट की है अत अध्ययन में पाया गया है कि कोरोना वायरस को एक वैश्विक समस्या के रूप में देखा जा रहा है जिसका प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर पड़ रहा है।

तालिका 1.14 कोरोना वायरस जैविक हथियार के निर्माण की स्पर्धा का परिणाम का अध्ययन

जैविक हथियार के निर्माण की स्पर्धा का परिणाम	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	9	4.3
टसहमत	10	4.8
अनिश्चित	80	38.1
स्हमत	59	28.1
पूर्ण सहमत	52	24.8
Total	210	100.0

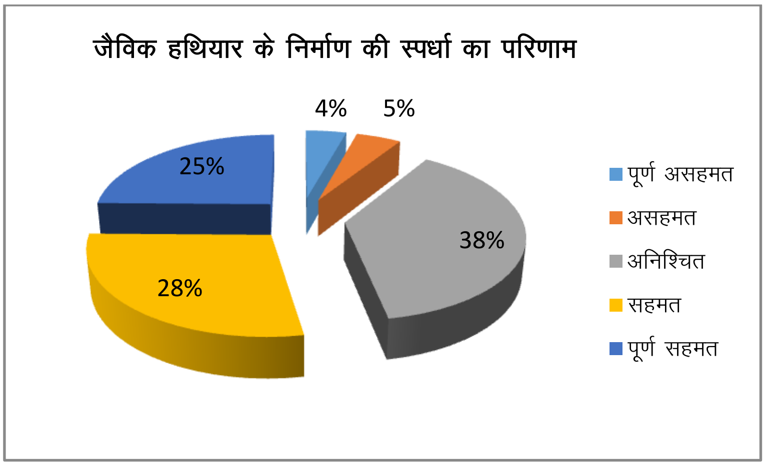

तालिका 1.14 के अवलोकन से स्पष्ट है कोरोना वायरस को 24.8 प्रतिशत ने पूर्ण सहमत्ता एवं 28.1 प्रतिशत ने सहमत्ता के साथ अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया है कि कोरोना वायरस दुनिया भर में एक जैविक हथियार के निर्माण की स्पर्धा का परिणाम है 38.1 प्रतिशत ने एस सन्दर्भ में अनिश्चिता व्यक्त की है एवं 4.8 प्रतिशत ने असह्मत्ता एवं 4.3 प्रतिशत द्वारा पूर्ण असह्मत्ता व्यक्त की गयी है अत अध्ययन में पाया गया है युवा वर्ग का दृष्टिकोण इस ओर है कि कोरोना वायरस को दुनिया भर में हो रहे जैविक हथियारों के निर्माण का परिणाम है।

तालिका 1.15 कोरोना वायरस मानव सभ्यता के अस्तित्व लिए खतरा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

मानव सभ्यता के अस्तित्व लिए खतरा	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	1	.5
अनिश्चित	3	1.4
सहमत	39	18.6
पूर्ण सहमत	167	79.5
Total	210	100.0

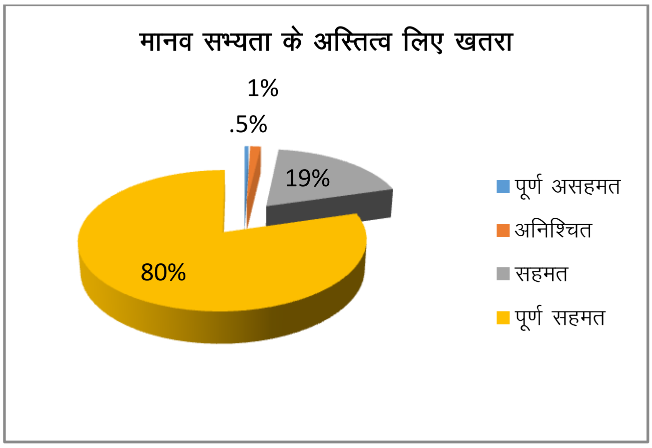

तालिका 1.15 के अवलोकन से स्पष्ट है 79.5 प्रतिशत युवा वर्ग ने पूर्ण सहमत्ता एवं 18.6 प्रतिशत ने सहमत्ता के साथ दृष्टिकोण व्यक्त किया कि प्रकृति के साथ अत्यधिक छेड़छाड़ एवं उसके संसाधनों का अनुचित तरीको से प्रयोग भविष्य में मानव सभ्यता के अस्तित्व लिए खतरा है एवं 1.4 प्रतिशत ने तटस्थटा एवं 0.5 प्रतिशत द्वारा पूर्ण असह्मत्ता व्यक्त की गयी है अत अधययन में पाया गया है कि मनुष्य द्वारा प्रकृति के साथ अत्यधिक छेड़छाड़ भविष्य में भी मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए संकट पैदा कर सकती है।

तालिका 1.16 कोरोना वायरस इलाज के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

इलाज खोजना असंभव	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	46	21.9
असहमत	105	50.0
अनिश्चित	41	19.5
सहमत	10	4.8
पूर्ण सहमत	7	3.3
Total	210	100.0

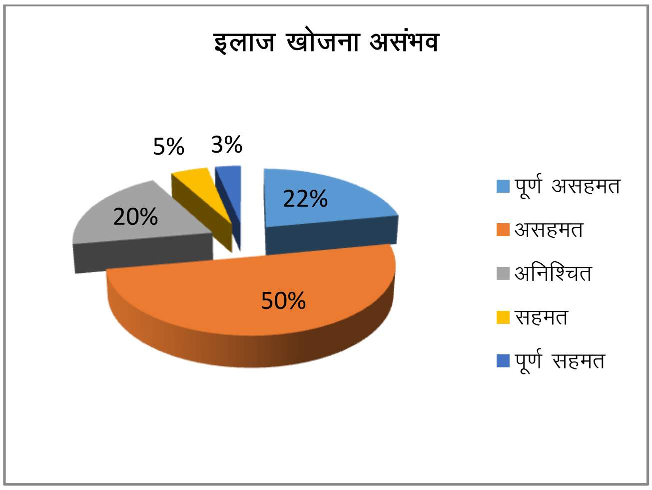

तालिका 1.16 के अवलोकन द्वारा पाया गया कि जहाँ एक ओर दुनिया भर में कोरोना वायरस का संक्रमण फैल रहा है वहीँ युवा वर्ग ने अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए 21. प्रतिशत ने पूर्ण सहम्मता एवं 50.00 प्रतिशत ने सहमत्ता जताई कि

इसका इलाज खोजना संभव है जोकि समाज के वैज्ञानिक एवं सकारात्मक सोच को दर्शाता है जबकि 19.5 प्रतिशत ने इस सन्दर्भ में अनिश्चिता तथा 4.8 असमत्ता एवं 3.3. प्रतिशत द्वारा पूर्ण असह्मत्ता व्यक्त की गयी है अत शोध में लोगो का कोरोना वायरस के इलाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया है।

तालिका 1.17 कोरोना वायरस जैविक हथियार के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

जैविक हथियार	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	3	1.4
टसहमत	10	4.8
अनिश्चित	31	14.8
स्हमत	99	47.1
पूर्ण सहमत	67	31.9
Total	210	100.0

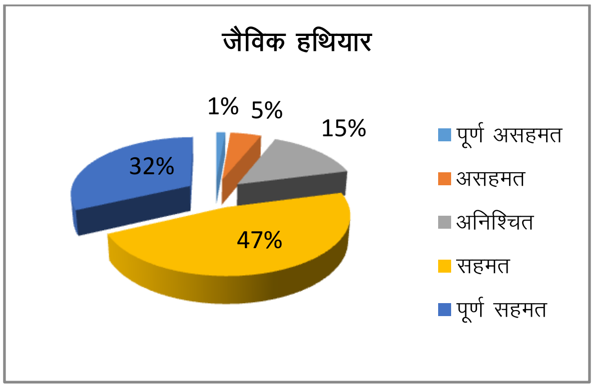

तालिका 1.17 के अवलोकन के विश्लेषण में पाया गया यदि कोरोना वायरस जैसे जैविक हथियार के रूप में निर्मित हुआ एन परिस्थितियों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ भूमिका के प्रति युवाओ के द्रष्टिकोण में 31.9 प्रतिशत ने पूर्ण सहमत्ता एवं 47.1 प्रतिशत द्वारा सहमत्ता व्यक्त की गयी है कि इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ भूमिका पर प्रश्न चिन्ह लगता है 14.8 प्रतिशत ने इस सन्दर्भ में तटस्थता एवं 4.8 असह्मता एवं 1.4 प्रतिशत युवाओ कर दृष्टिकोण में में पूर्ण असह्मता पायी गयी है अत शोध के परिणामस्वरूप पाया गया है वर्तमान दौर में अगर कोरोना वायरस जैविक हथियार के रूप में निर्मित हुआ है इन परिस्थितियों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ भूमिका पर प्रश्न चिन्ह लगता है

तालिका 1.18 कोरोना वायरस मांसाहारी खानपान की संस्कृति के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

मांसाहारी खानपान की संस्कृति के कारण	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	8	3.8
टसहमत	30	14.3
अनिश्चित	48	22.9
स्हमत	72	34.3
पूर्ण सहमत	52	24.8
Total	210	100.0

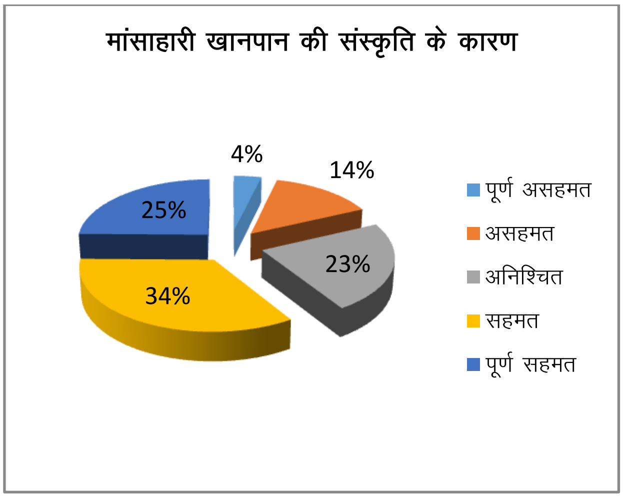

तालिका 1.18 के अवलोकन में पाया गया है 24.8 प्रतिशत द्वारा पूर्ण सहमत्ता एवं 34.3 प्रतिशत द्वारा सहमत्ता व्यक्त की गयी है कि कोरोना वायरस मांसाहारी खानपान की संस्कृति के कारण मानव समाज में पनपा है 22.9 प्रतिशत युवाओ द्वारा इस सन्दर्भ में अनिश्चिनता प्रकट की गयी है एवं 14.3 द्वारा असहामता एवं 3.8 प्रतिशत द्वारा पूर्ण असह्मता व्यक्त की गयी है अत अध्ययन में पाया गया है कि कोरोना वायरस संक्रमण जैसी महामारी मानव के मांसाहारी खानपान की संस्कृति के कारण मानव समाज में पनपा है

तालिका 1.19 आर्थिक क्रियाकलापों पर प्रभाव का अध्ययन

आर्थिक क्रियाकलापों पर दुष्प्रभाव	Frequency	Percent
अनिश्चित	5	2.4
स्हमत	65	31.0
पूर्ण सहमत	140	66.7
Total	210	100.0

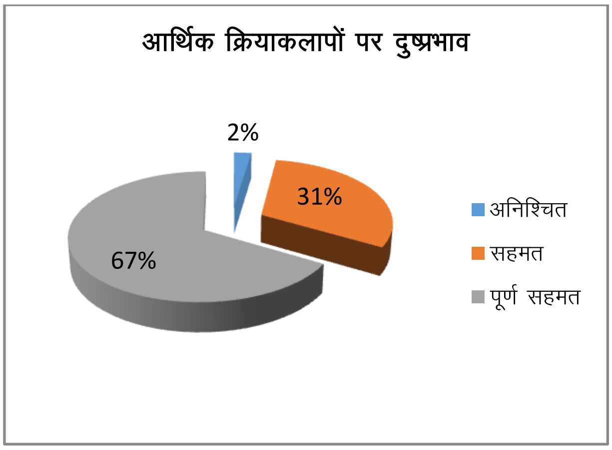

तालिका 1.19 के विश्लेषण से पाया गया 66.7 प्रतिशत लोगो ने पूर्ण सहमत्ता एवं 31 प्रतिशत ने सहमत्ता के साथ दृ ष्टिकोण व्यक्त किया कि देश एवं सम्पूर्ण दुनिया में कोरोना वायरस संक्रमण के कारण सरकारों के दैनिक क्रियाकलाप एवं आर्थिक क्रियाकलापों पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है एवं 2.4 प्रतिशत द्वारा इस सन्दर्भ में अनिश्चिता व्यक्त की गयी है अत शोध में पाया गया है कोरोना वायरस संक्रमण ने सम्पूर्ण संसार भर की अर्थव्यवस्था को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।

तालिका 1.20 कोरोना वायरस बाजारवाद की उपज क्रियाकलापों का अध्ययन

बाजारवाद की उपज	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	9	4.3
असहमत	30	14.3
अनिश्चित	80	38.1
सहमत	58	27.6
पूर्ण सहमत	33	15.7
Total	210	100.0

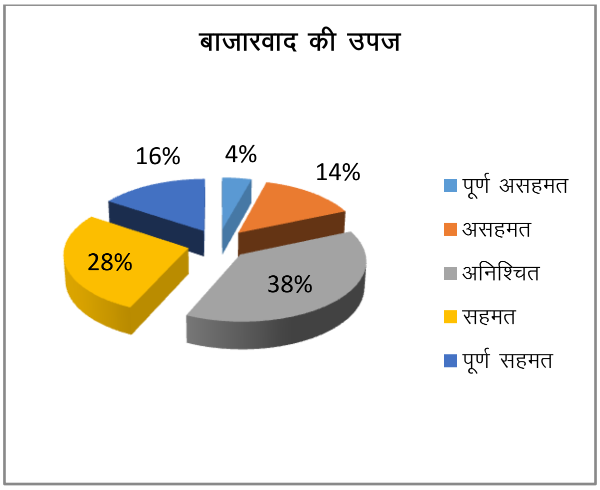

तालिका 1.20 के विश्लेषण में कोरोना वायरस के प्रति युवाओ के दृष्टिकोण में 15.7 प्रतिशत द्वारा पूर्ण सह्मत्ता एवं 27.6 प्रतिशत द्वारा सहमत्ता के साथ कोरोना वायरस को पूंजीवाद वर्चस्व एवं बाजारवाद की उपज के रूप में व्यक्त किया गया है वही 38.1 प्रतिशत कर दृष्टिकोण में इस सन्दर्भ में अनिश्चिता अर्थात तटस्थतापायी गयी है वहीँ 14.3 प्रतिशत द्वारा इसमे असहमति एवं 4.3 द्वारा एस सन्दर्भ में पूर्ण असहमति व्यक्त की गयी है।

तालिका 1.21 कोरोना संक्रमण उम्र से सम्बन्धित के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

60 वर्ष से अधिक उम्र से सम्बन्धित लोगो को तेजी से संक्रमण	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	4	1.9
असहमत	21	10.0
अनिश्चित	29	13.8
सहमत	87	41.4
पूर्ण सहमत	69	32.9
Total	210	100.0

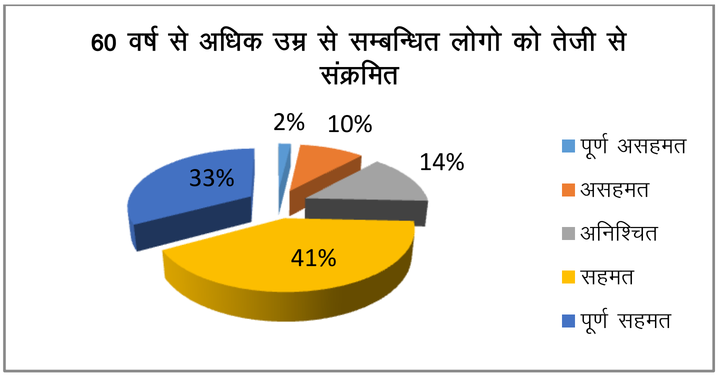

तालिका 1.21 के अवलोकन से स्पष्ट है 32.9 प्रतिशत द्वारा पूर्ण सह्मत्ता एवं 41.4 प्रतिशत द्वारा सहमत्ता के साथ दृ ष्टिकोण में पाया गया कि कोरोना संक्रमण एक खाश वर्ग जैसे 60 वर्ष से अधिक उम्र से सम्बन्धित लोगो को तेजी संक्रमित कर रहा है तथा 13.8 प्रतिशत द्वारा इस सन्दर्भ में तटस्थता एवं 10 प्रतिशत द्वारा असह्मत्ता एवं 1.9 प्रतिशट पूर्ण असह्मत्ता पायी गयी है अत शोध में पाया गया है जैसा कि दुनिया भर में भी संक्रमित लोगो की मौतों से ज्ञात हो पाया है कोरोना वयारस एक खाश वर्ग आयु के लोगो में अत्यधिक घातक सिद्द हो रहा है।

तालिका 1.22 सोशल साइट्स की भूमिका का अध्ययन

सोशल साइट्स द्वारा जागरूक	Frequency	Percent
पूर्ण असहमत	3	1.4
असहमत	3	1.4
अनिश्चित	8	3.8
सहमत	105	50.0
पूर्ण सहमत	91	43.3
Total	210	100.0

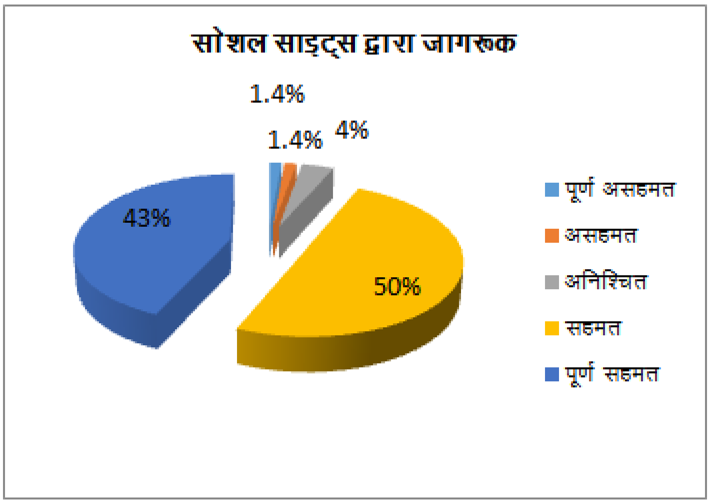

तालिका 1.22 के विश्लेषण में पाया गया 43.3 प्रतिशत युवाओ द्वारा पूर्ण सहमत्ता एवं 50.0 प्रतिशत द्वारा सहमता के साथ स्वीकार्य किया गया कि विभिन्न सोशल साइट्स द्वारा लोगो को कोरोना के प्रति सजग एवं जागरूक किया है 3.8

प्रतिशत इस सन्दर्भ में तटस्थ एवं 1.4 असहमत एवं 1.4 पूर्ण असहमत है अत शोध में पाया गया कि सोशल साइट्स ने लोगो को कोरोना वायरस संक्रमण के प्रति जागरूक किया है

तालिका 1.23 कोरोना वायरस संक्रमण टेस्ट की मात्रा का अध्ययन करना

कम मात्रा मे टेस्ट	Frequency	Percent
हा	130	61.9
नही	40	19.0
जानकारी नही	40	19.0
Total	210	100.0

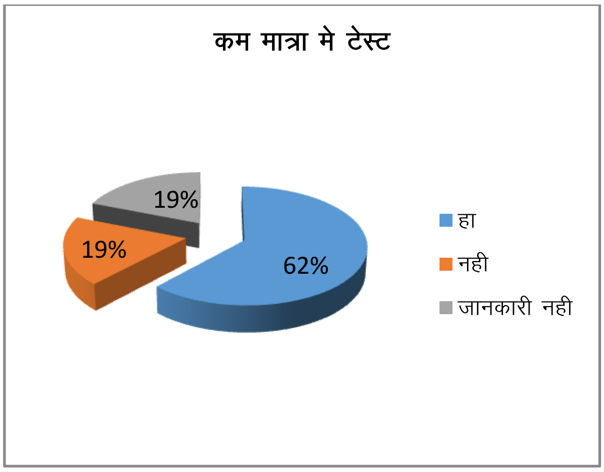

तालिका 1.23 के अवलोकन से स्पष्ट है 61.9 प्रतिशत युवाओ द्वारा स्वीकार किया गया कि भारत में अभी भी काफी कम मात्रा में कोरोना के टेस्ट किये जा रहे है तथा 19 प्रतिशत द्वारा इस सन्दर्भ में स्वीकार किया की टेस्ट पर्याप्त मात्रा में किये जा रहे है वही 19 प्रतिशत द्वारा इस सन्दर्भ में कोई जानकारी नही होना स्वीकार्य किया है अत शोध में पाया गया है कि भारत में काफी कम मात्रा में कोरोना के टेस्ट किये जा रहे है

महत्व

कोविड दुनिया में तेजी से महामारी के रूप में फैलता एक नया वायरस है जिसका फिलहाल कोई उपचार या टिका विश्व के किसी भी तकनिकी रूप से सक्षम देश पास मौजूद नही है इसका एक बुनियादी बचाव का आधार है स्वच्छता और रोकथाम के उपाय अपनाये जाये और सम्पूर्ण विश्व आज वही कर रहा है मगर यह बात एकदम सत्य है कि एक वायरस ने दुनिया भर में मानव के समक्ष जीवन का संकट पैदा कर दिया है मानव समाज बेहद डरा हुआ है दुनिया के तमाम देशो में लॉकडाउन की स्थिति बनी हुई है वहीँ अर्थव्यवस्था धीरे धीरे गिरती जा रही है इन हालातों में मानव जीवन में बदलाव हरेक पहलु से हो रहा है मानव द्वारा प्रकृति के साथ असिमिति खिलवाड़ भी एक पहलु इसका सामने आ रहा है प्रस्तुत अध्ययन में इस तथ्य की ओर लोगो के रुझान आये है कि यह मानव द्वारा प्रकृति के साथ खिलवाड़ एवं मानव जनित आपदा की तरह है वही इसने लोगो के सामान्य दिनचर्या में डर का वातावारण पैदा कर दिया है जो लोगो के व्यवहार को बदल रहा है लोग अपने घरो से बाहर जाने पर डरे हुए है एवं परिचित लोगो से हाथ मिलाने से बच रहे है सामाजिक परिवेश में भय की स्थिति बनी हुई है लोग घरो में बंद है उनके मस्तिष्क में चिंता ,डर ,अकेलापन और अनिश्चिनताबनी हुई है कोडिड के इस संक्रमण काल में लोगो को उम्मीद भी है जल्दी इसकी दवाई खोज ली जाएगी जोकि मुश्किल दौर में लोगो के हौसले को भी दर्शाता है भारत दुनिया के अन्य देशो को मलेरिया ड्रग्स उपलब्ध करा

रहा है जो फिलहाल इसके इलाज हेतु उपयोग किया जा रहा है वही एक मत यह भी उठा है इसने भूमंडलीकरण की विचारधारा से मानव को पुन संकुचित दायरों में बांध दिया है वही प्रत्येक राष्ट्र द्वारा अपनी सुरक्षा के लिए संसाधन जुटाने की जंग जारी है तथा यदि जैसे की संभवना जताई जा रही है यह संक्रमण चीनी जैविक हथियार के रूप में भी हो सकता है जोकि संयुक्त राष्ट्र संघ की कायर्शैली एवं अस्तित्व पर प्रश्नचिंह जरुरु लगाता है क्योकि इस वायरस के कारण सम्पूर्ण विश्व की मानव जाति आज खतरे में है यही से नये चिंतन की सम्भावना दुनिया के समक्ष आज है कि दुनिया भर के विद्वान, वैज्ञानिको ,शिक्षको ,राजनेताओ , लेखको इत्यदि सभी वर्ग को इस दुनिया को बचाने हेतु प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठाते हुए विकास की नई अवधारण के प्रति शोध एवं विचार विमर्श किया जाएँ क्योकि इस बात में आज कोई दोराय नही है कि दुनिया के शक्तिशाली देश एवं उनकी व्यवस्था आज कोरोना महामारी के आगे घुटने टेके है इन परिस्थितियों में जरुरी है मनुष्य के महामानव होने के घमण्ड को छोड़ते हुए प्रकृति के साथ मधुर सम्बन्ध बनाते हुए आगे बढ़ा जाये इतिहासकार प्रो शेखर पाठक द्वारा इस सन्दर्भ में एक पत्र के माध्यम से कहा है कि आज दुनिया में अधिक मानवीय और अन्य जीव प्रजातियों का पक्ष लेने वाली व्यवस्था के सर्जन की ओर आगे बढ़ने की आवश्यकता है क्योकि यह एक वैश्विक महामारी है दुनिया भर में 14 अप्रैल 2020 तक कोरोना वायरस से एक लाख बीस हजारसे अधिक लोगों की मौत हो गयी है वही कोरोना वायरस के संक्रमण से संक्रमित लोगो की संख्या भी बढ़कर 19 लाख 29 हजार के पार पहुंच गए हैं जोकि गंभीर चिंता का विषय है

सन्दर्भ

https://www.bbc.com/hindi/science-52012211

https://m.economictimes.com/hindi/news/coronavirus-which-country-in-the-world-has-how-much-covid19-infected-patient/articleshow/74648830.cms

https://www.bbc.com/hindi/india-51849532#share-tools

https://www.bbc.com/hindi/science-51366908

https://hindi.webdunia.com/bbc-hindi

https://www.bbc.com/hindi/india-51849532

https://www.bhaskarhindi.com/national/news/coronavirus-disease-covid-19-novel-coronavirus-first-patient-of-coronavirus-symptoms-of-coronavirus-coronavirus-latest-updates-treatment-of-coronavirus-115339

https://www.bbc.com/hindi/science-51366908#share-tools

https://www.bbc.com/hindi/india-52190038#share-tools

http://thewirehindi.com/116487/corona-virus-lockdown-condition-of-migrant-workers/

Pathak,S.(2020).letter.